बाल मन कैमूर

माह फरवरी वर्ष 2022

अंक 2

सम्पादकीय

"प्यारे बच्चों,
नमस्कार,
आप सभी बच्चों के प्रति प्रेम और अपनापन ने मुझे आप सभी के लिए कुछ नया करने के लिए प्रेरणा प्रदान की| इस पत्रिका की दूसरी कड़ी को समर्पित करते हुए हमें काफी प्रशन्नता हो रही है| आज हम इस पत्रिका का अंक 2 आपके लिए लाए है| हम पूरी कोशिश करेंगे कि आगे भी आपको इस पत्रिका का अगला अंक प्राप्त होते रहे| यह अंक बेहद ख़ास है क्योंकि हमारी मेहनत और आपके लगन द्वारा ही आज यह पत्रिका आप सभी के बीच है| प्यारे बच्चों, आप इसी तरह से अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे| हम आपकी प्रतिभा को इस पत्रिका में स्थान जरूर देंगे|

हमें आशा ही, नहीं पूर्ण विश्वास है की यह पत्रिका आपके कैमूर ही नहीं पूरे बिहार या कहे पूरे भारत में आपकी प्रतिभा को एक मंच प्रदान करता रहेगा|हमे बहुत सारे रचना मिले हैंजिसमे प्राप्त पेंटिंग, कविता, कहानी आदि का चयन करते हुए प्रकाशित किया गया है| अन्जाने में यदि कोई भूल हुई होगी तो उसमे सुधार करने की कोशिश होगी| भूल-चूक के लिए हम क्षमाप्रार्थी है| आपके उज्जवल भविष्य की कामना के साथ |

: धीरज कुमार

विद्यालय =उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा भभुआ

प्रेरक प्रसंग

एक बार एक गुरुजी थे जो अपने शिष्यों से बहुत प्यार करते थे ।उनके द्वारा अपने शिष्यों को सदैव अच्छी शिक्षा दी जाती थी।जब उनका अंतिम समय समीप आया तो उन्होंने अपने सभी शिष्यों को बुलाया और कहा कि मेरे मुंह के अंदर देखो और बताओ की तुम सभी को क्या दिख रहा है?
सभी शिष्यों ने बारी-बारी गुरुजी के मुंह में अंदर देखा और कहा कि गुरु जी आपके मुंह में कुछ भी नहीं है।फिर गुरुजी ने कहा कि ध्यान से देखो पर किसी भी शिष्य को कुछ समझ नहीं आया।आखिरी में एक शिष्य ने कहा कि गुरु जी बूढ़े होने के कारण आपके मुंह में आपके जीभ के अलावा कुछ भी नही है।
गुरुजी ने अपने शिष्यों से कहा- यही तो मैं तुम सभी को बताना चाहता था कि बूढ़े होने के कारण सभी दांत गिर चुके हैं बस जीभ दिखाई दे रही है यानी कि हमारे जन्म के बाद दांत आए और मरने से पहले ही टूट कर गिर जाएंगे या गिर गए हैं। जीभ जन्म के समय भी थी और अंतिम चरण में भी मेरे साथ है।
दांत कठोर थे और जीभ नम्र और मुलायम इसलिए जीवन में भी सदैव नम्र और सरल रहना चाहिए। कठोर बनोगे तो अंत निश्चित है ।जिस प्रकार जीभ अभी भी है और दांत समाप्त हो जाते हैं ।इस शिक्षाप्रद कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि जीवन में व्यक्ति को सदैव विनम्र,सरल और मिलनसार होना चाहिए जिस प्रकार 32 दांत के बीच भी जीभ रहती है।

अजब - गजब

1.मनुष्य का दिल 30 फीट की ऊंचाई तक खून को फेंक सकता है।
2.हर एक इंसान औसतन अपने पूरे जीवन के 25 वर्ष सो कर बिताता है।
3.शहद अकेला ऐसा प्राकृतिक पदार्थ है जो खराब नही होता।
4.BASENJI नस्ल के कुत्ते भौंक नही सकते है।
5."The quick brown fox jumps over the lazy dog." वाक्य में अंग्रेजी भाषा के पूरे 26 लेटर्स आ जाते है।

प्रधान संपादक=धीरज कुमार(UMS सिलौटा भभुआ)

सहयोगकर्ता सदस्य:-
1.अवधेश राम(UMS बहुवरा)
2. सोनी कुमारी कुशवाहा (मध्य विद्यालय अखलासपुर)
3.आशुतोष कुमार (UHS कटरा कला मोहनिया)
4.हरिदास शर्मा (RKMS डहरक)

आपके पेंटिंग्स

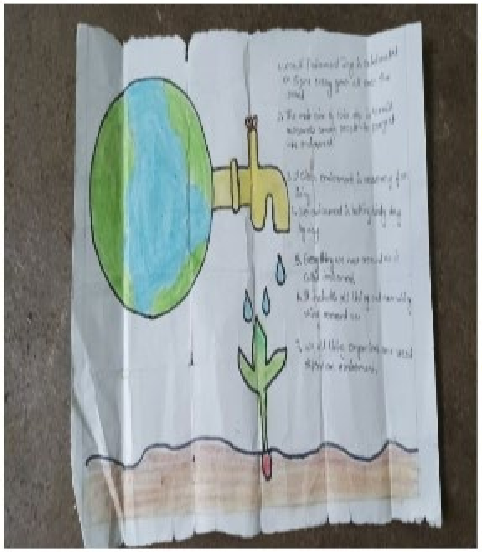

हर्षित राज वर्ग 6
UMS सिलौटा भभुआ

कुमारी आदित्य वर्ग 8
UHS कटरा कला मोहनिया

अन्नू यादव
UMS सिलौटा भभुआ

आनंद कुमार वर्ग 4
मध्य विद्यालय अखलासपुर

कृतिका कुमारी वर्ग 4
मध्य विद्यालय अखलासपुर

रिफत नाज़ वर्ग 9
र.स.बालिका उच्च विद्यालय भभुआ

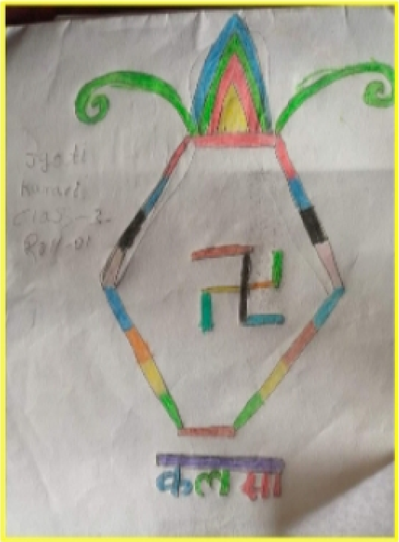

ज्योति कुमारी वर्ग 3
N.P.S.भटवलिया नुआव

फुरकान आलम वर्ग 8
उर्दू मध्य विद्यालय भभुआ-15

मेरा विद्यालय मेरी प्रतिष्ठा

मेरा विद्यालय मेरी प्रतिष्ठा

बड़ा सा प्रांगण और उससे भी बड़े समष्याओं से आच्छादित उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय कटराकला, मोहनियाँ, कैमूर अन्य सरकारी विद्यालयों के समान ही एक सामान्य विद्यालय था। लेकिन जब व्यक्ति नौकरी को जीविकोपार्जन का साधन मात्र नही बल्कि राष्ट्र सेवा का अवसर मान कार्य करता है तो वह संसाधनों का रोना नही रोता बल्कि **जो प्राप्त है वही प्रर्याप्त है मान राष्ट्र को परम वैभव तक पहुचाने का अपने को घटक मान सब कुछ समर्पित कर देना चाहता है।** जैसा शास्त्रों ने कहा है –

यथा चाल्पेन माल्येन वासितं तिलसर्षपम्।

न मुञ्चति स्वकं गन्धं तद्वत् सूक्ष्मस्य दर्शनम्।। (महाभारतम् शान्तिपर्व २८०)

(अर्थात् जैसे थोड़े से पुष्प एवं माला द्वारा वासित किया हुआ तिल और सरसों का तेल अपनी गन्ध नही छोड़ता है, उसी प्रकार थोड़े से प्रयत्न से न तो दोष दूर होते है और न सूक्ष्म ब्रह्म का साक्षात्कार ही हो पाता है।)

परिणामस्वरूप सामान्य भी असामान्य तथा साधारण भी असाधारण दिखने लगता है। जिसका जीता जागता उदाहरण मेरा विद्यालय है।

प्रधानाध्यापक (आशुतोष कुमार) और कुछ शिक्षको के अतुलनिय योगदान के फलस्वरूप आज विद्यालय मे संसाधन विहीन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो नवाचार के रूप मे ज्ञान बगीचा का निर्माण किया जो अन्य के लिए भी अनुकरणीय है। ज्ञानबर्धक फलैक्स पर अंकित अंग्रेजी के अल्फाबेट बच्चों को न केवल अक्षर ज्ञान बल्कि उन अक्षरों को भारत के महापुरूषों से जोड़ कर भारतीय मनिषियों के व्यक्तित्व से भी अवगत कराता है। विद्यालय के बच्चों मे लोकतांत्रिक चरित्र एव नेतृत्व भाव का विकास हो बाल संसद, मीना मंच तथा युथ क्लब की भुमिका सराहनिय है। इको क्लब एवं संबंधित शिक्षको के प्रयास के कारण आज विद्यालय का प्रांगण न केवल मनमोहक एवं आर्कषण का केन्द्र बना है बल्कि सकारात्मक बदलाव का उदघोष स्वयं कर रहा है। पुस्तकालय रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकों से जहाँ परिपूर्ण है वही शिक्षक वर्ग कक्षों मे TLM का प्रयोग कर विषय को सरल एवं सहज रूप मे प्रस्तुत करने सफल प्रयास करतें है।

जहाँ चाह वहाँ राह कहावत को सफलतापूर्वक चरितार्थ करता विद्यालय आज शिक्षा के क्षेत्र मे नये मानक स्थापित करने के उद्वेश्य से सतत् अग्रसर है।

कविता

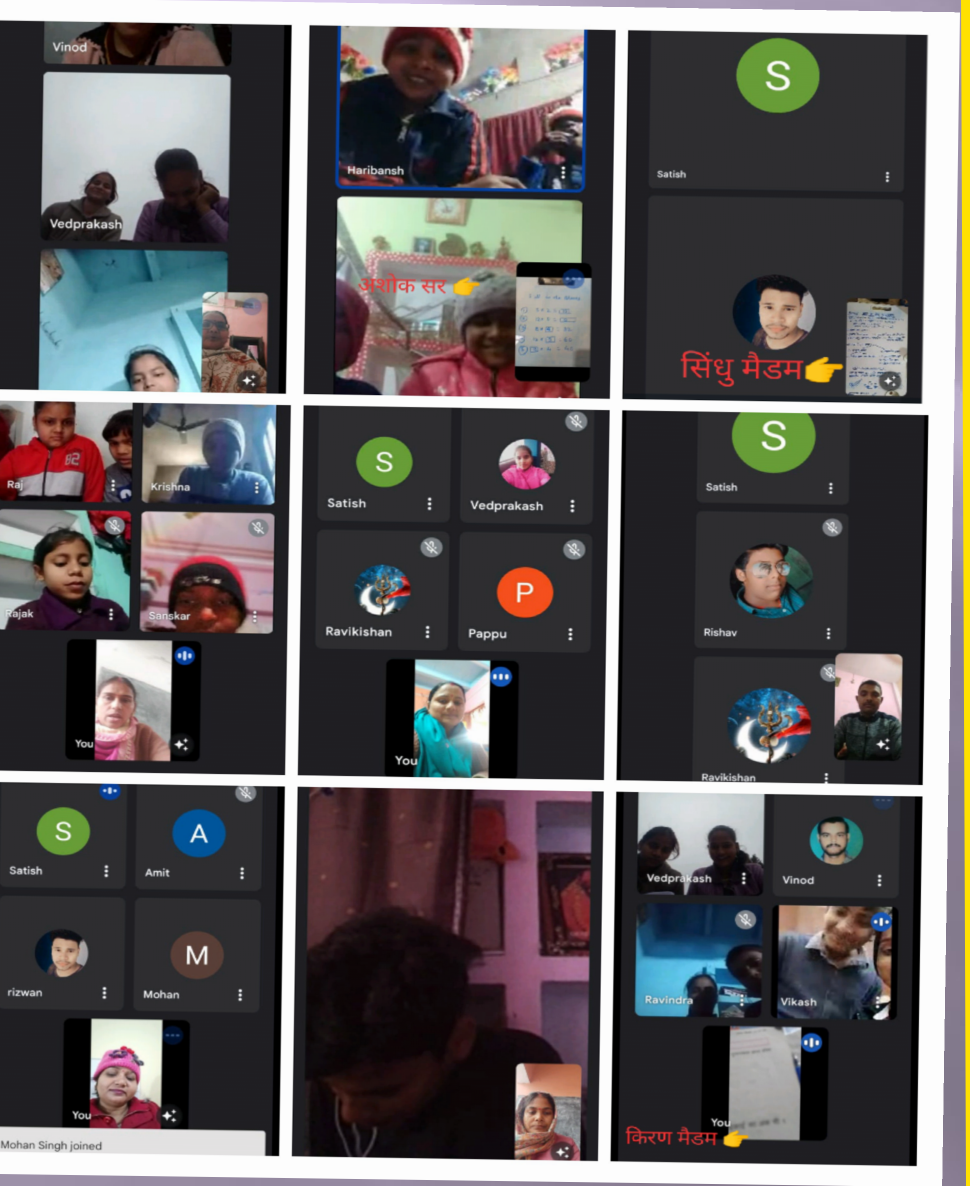

ऑनलाइन क्लास

****

सोचा किसने था की बच्चे और शिक्षक पास रह कर भी दूर हो जाएंगे?
किसको पता था की आएगी महामारी और स्कूल बंद हो जाएंगे?
एक दूसरे से मिलना भी मुश्किल और घर से निकलने में भी थी बहुत पाबंदियां।
पढ़ाई बच्चो की रुक गई थी करे भी तो क्या करे सरकारी स्कूल के बच्चे और बच्चियां।।
अब कैसे भी हो पढ़ाई,जागरूक शिक्षको ने बच्चो को मोबाइल से पढ़ाने का बीड़ा उठाया।
अभिभावकों के संपर्क सूत्र से संपर्क कर ऑनलाइन क्लास का विकल्प सुझाया।।
शुरू शुरू तो हर काम की तरह आई कई परेशानियां।
फिर धीरे धीरे हर पढ़ाई समझ आने से दूर हो गई सब कठिनाइयां।।
अब ऑनलाइन क्लास के समय बच्चे तैयार रहते है ,मन लगा कर पढ़ते है और मन की बात कहते है।
शिक्षक भी मन लगा कर अपने अपने विषय पढ़ाते है साथ में उनकी समस्या का समाधान करते है।।
सब जानते है ऑफलाइन पढ़ाई स्कूल वाली सबसे बेहतर है।
लेकिन इस महामारी में ऑनलाइन पढ़ाई के अलावा दूसरा और क्या विकल्प है?
खाली बैठने से बेहतर है कुछ न कुछ करते रहना।
जब तक विद्यालय बंद है प्यारे बच्चो ऑनलाइन क्लास से पढ़ते रहना।

हमारे आदर्श

हमारे समाज में गुरु सदा से वंदनीय रहे है।गुरु की महिमा का बखान सभी जगह सुनने को मिलता है।आज के इस अंक में ऐसे ही एक महान शिक्षक की बात करने जा रहे है:-

श्री हरिदास शर्मा(राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित)
प्रधानाध्यापक
राजकीयकृत मध्य विद्यालय डहरक , रामगढ़

"एक शिक्षक से ही सभ्य और उन्नत समाज की रचना होती है।"इस कथन को साबित कर दिखाया है बिहार के कैमूर जिले के शिक्षक श्री हरिदास शर्मा जी ने।कुशल नेतृत्वकर्ता,मृदुभाषी,अपने कार्य के प्रति समर्पण भाव के कारण अपने विद्यालय को सदा आगे रखा,फलस्वरुप विद्यालय की चर्चा पूरे बिहार में होने लगी।दीवारों पर खुद से चित्रकारी,चेतना सत्र में नवाचार,बाल हठ सेना का गठन ,QR कोड से रोचक जानकारी के साथ विद्यालय की सुंदरता को बढ़ाने और tlm के प्रयोग सहित पढ़ाई से विद्यालय के बच्चो का विकास आज सबके सामने है।हम श्री हरिदास शर्मा जी जैसे शिक्षको को सलाम और नमन करते है।

पहेली:-

1.एक कहानी मैं कहूं,सुन ले मेरे पूत।
बिन पैरो के उड़ चला,बांध गले में सूत।।

2.एक बहादुर ऐसा वीर।
गाना सुना कर मारे तीर ।।

3.काला घोड़ा सफेद सवारी।
एक उतरा तो दूसरे की बारी।।

4. बूझो भैया एक पहेली।
जब काटो तो नई नवेली।।

5.हरे चोर का लाल मकान।
उसमे है काले छोटे कई शैतान।।

6.एक सिपाही बड़ा अनाड़ी।
खींच के उसकी पैंट उतारी।।

🙈हंसी के फव्वारे:-

1.मच्छर का बच्चा पहली बार उड़ा .....जब वापस आया तो
मां ने पूछा :- "कैसा लगा उड़ कर?"
मच्छर का बच्चा बोला :- "बहुत अच्छा... जहां भी गया ,सभी लोग तालियां बजा रहे थे"।
😂😂😂😂😂😂😂😂

2. विज्ञान की क्लास में एक विद्यार्थी सो रहा था।
टीचर गुस्से से :-क्लास में सो रहे है।
विद्यार्थी हड़बड़ी में:- नही सर, मैं सो नही रहा था।
टीचर :-तो?
विद्यार्थी :- गुरुत्वाकर्षण के कारण मेरा सर नीचे झुक गया था।🤣🤣🤣🤣🤣🤣🤣🤣🤣

उत्तर :- 1.पत्तंग,2.मच्छर,3. तवा और रोटी,4.पेंसिल,5.तरबूज,6.केला

टी.एल.एम.द्वारा शिक्षण भाग 2

======================

पिछले अंक में Advance Quize Board पर चर्चा के बाद अब हम रद्दी सामग्री से तैयार एक खूबसूरत टी.एल.एम. पर चर्चा करने जा रहे हैं जिसका नाम है- Two In one (जोड़ने एवं घटाने की मशीन):-

=================================

यह गत्ते से बना हुआ बाक्स के आकार का एक टी एल एम है जिसके माध्यम से जोड़ एवं घटाव दोनों क्रियाओं की अवधारणा आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है।

इसके ऊपर में दो खुली खिड़की है। मध्य भाग में एक खड़ी पट्टी है जिसपर (-),(+) एवं(N) चिह्न अंकित है। पट्टी के दाहिने तरफ मशीन के बाडी पर एक तीर का निशान बना हुआ है जो पट्टी की ओर संकेत करता है। तीर के नीचे एक बंद खिड़की है जिससे परिणाम मालूम किया जाता है।

इसमें हम मिट्टी की छोटी-छोटी रंगीन गोलियों का इस्तेमाल करते हैं। जोड़ या घटाव कोई भी क्रिया करने से पहले मशीन को न्यूट्रल करना होता है जिसके लिए पट्टी को ऊपर खिसकाकर N चिह्न को तीर के सामने करते हैं। अब मान लिया जाए हमें 5 और 4 को जोड़ना है तो ऊपर वाली पहली खुली खिड़की में 5 गोली डालेंगे। फिर पट्टी को नीचे करके + चिह्न को तीर के सामने करेंगे। इसके बाद दूसरी खिड़की में 4 गोली डालेंगे। परिणाम खिड़की का कपाट खोलेंगे तो 9 गोली बाहर निकलेगी जो 5 और 4 का योगफल हुआ।इसी प्रकार घटाव की क्रिया भी करेंगे।

अवधेश राम
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
बहुवरा भभुआ

शिक्षा के क्षेत्र में नई तकनीक:- e- LOTS
आप इसे स्कैन कर अपने पाठ्य पुस्तक सामग्री का अध्धयन कर सकते है।आप e -LOTS ऐप को प्लेस्टोर से डाउनलोड भी कर सकते हैं।

e-LOTS

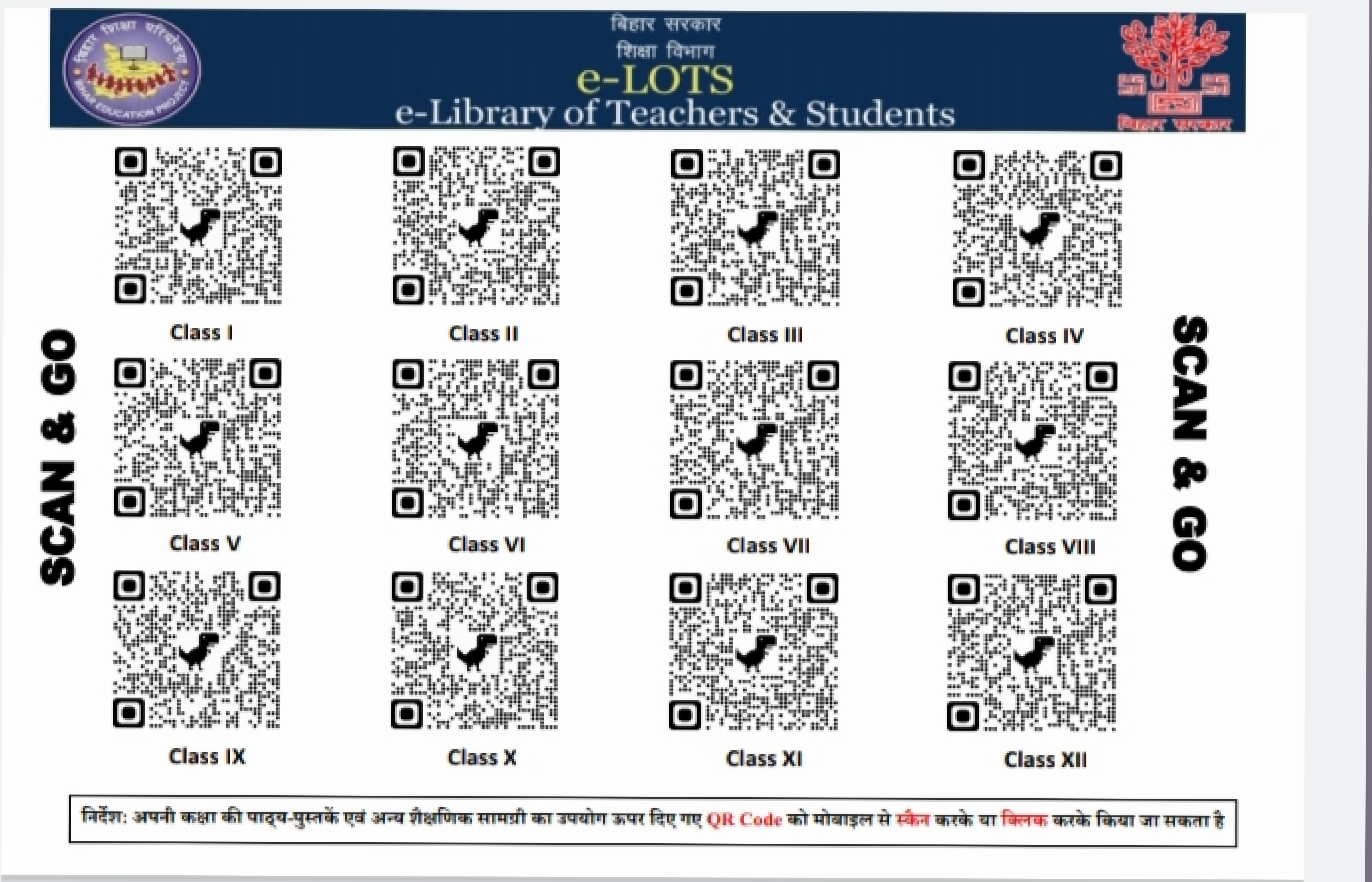

चित्र देखो और कहानी बना व्हाट्सएप करे।हम आपके नाम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।

आप अपने सुझाव और जवाब मोबाईल नंबर 9431680675 पर दे सकते है।